CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

**[Conference Special-NTMAE-24]**

# शैक्षिक परिपेक्ष्य में नैतिकता एवं जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता

***श्रीमती संतोष तँवर***
*शोधार्थी–शिक्षाशास्त्र, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर*
***डॉ सुधीर रुपानी***
*शोध निदेशक व रीडर- शिक्षाशास्त्र*
*राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान बीकानेर*
*Email: santoshtanwar1983@gmail.com, Mobile-9530006114*

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 19.05.2024, Final proof received: 18.06.2024, Accepted: 27.06.2024

**सारांश**

*शिक्षा निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है जिससे मनुष्य समाज को विकास की ओर अग्रसर करता है । शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्ष् धातु में आ प्रत्यय लगने से बना है जिसका अर्थ सीखने से है अर्थात अपने ज्ञान में निरंतर वृद्धी करना। मानव इस भौतिक युग में अपनी पहचान खोता जा रहा है वह केवल भौतिक सुख सुविधा के पीछे भाग रहा है। इस भौतिकवादी समाज में व्यक्ति को फिर से अपनी पहचान बनाने हेतु नैतिक एवं जीवन मूल्यों को अपनाना होगा । हमें विद्यालय में बालकों के नैतिक विकास को बढाने के लिए उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए ,जिससे जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या का समाधान बालक अपने विवेक से कर सके ।वह अपने जीवन में सहयोग ,सदाचार, दया ,सहानुभूति ,अहिंसा, आदि मूल्यों को अपना सके । इन नैतिक मूल्यों द्वारा समाज को शांति के पथ पर आगे बढाया जा सकता है। इसलिए शिक्षक को बालक के सर्वांगीण विकास का प्रयास निरंतर करते रहना चाहिए। वर्तमान समय में नैतिक एवं जीवन मूल्यों को अपनाने हेतू शिक्षक द्वारा प्रयास करने चाहिए।*

**मुख्य शब्द :** *नैतिक विकास ,अहिंसा ,सर्वांगीण विकास ,सहानुभूति, भौतिकवादीशिक्षा ,जीवन मूल्य , आदि.*

## प्रस्तावना

शिक्षा जीवन भर चलने वाली ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव के विचारों में परिवर्तन लाया जा सकता है। और इस परिवर्तन से मनुष्य विकास की ओर अग्रसर होता है ,शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत एवं शिक्षित बनती है , जिससे व्यक्ति किसी समस्या का समाधान अपने विवेक द्वारा सरलता से कर सकता है। शिक्षा ऐसी सिद्धि है जिसके द्वारा बालक अपने विकास को प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर कर सकता है। शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्षा धातु से बना है, शिक्षा का अर्थ है -सीखना और सीखना अर्थात सीखने व सीखने की प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है। बालक का सर्वांगीण विकास शिक्षा के बिना नहीं हो सकता है ,शिक्षा वह कड़ी है जो मनुष्य को परिवार एवं समाज में जीवन पर्यंत तक जोड़े रहती है शिक्षा मुख्यतः दो प्रकार की हो सकती है-

1) अनौपचारिक शिक्षा एवं

2) औपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा जीवन पर्यंत तक चलने वाली शिक्षा है, जो व्यक्ति किसी भी स्थान किसी भी आयु में प्राप्त कर सकता है । औपचारिक शिक्षा वह शिक्षा है जो बालक एक निश्चित आयु, निश्चित पाठ्यक्रम एवं निश्चित स्थान पर रहकर पूर्ण कर सकता है ।विद्यालय शिक्षा इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। जहां बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है ,विद्यालय में ज्ञान प्राप्त कर बालक इसका उपयोग अपनी भावी जीवन में करने योग्य बन जाता है । विद्यालय में नैतिक एवं जीवन मूल्यों की शिक्षा प्राप्त कर बालक अपने कार्यों से समाज में अग्रणी स्थान प्राप्त करता है। वह एक दीपक के समान चारों ओर अज्ञान रूपी अंधकार को समाप्त कर ज्ञान रूपी प्रकाश को प्रसारित करता है। आते हैं नैतिकता एवं जीवन मूल्य द्वारा मानव जीवन में शांति, सुरक्षा, प्रेम ,सहयोग ,अहिंसा ,सहानुभूति ,सहायता ,भाईचारे आदि गुणो को विकसित किया जा सकता है,जो वर्तमान शिक्षा में बहुत ही आवश्यक है।

शिक्षा दर्शन पर आधारित है दर्शन मनुष्य के विचारों में स्थित होता है। जबकि शिक्षा उन्ही विचारों का एक वास्तविक एवं व्यावहारिक रूप है। एडम्स के अनुसार" शिक्षा दर्शन शास्त्र का गत्यात्मक पहलू है। "शिक्षा जीवन भर चलने वाली वह प्रक्रिया है ,जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को व्यवस्थित करता है । सीमित अर्थ में शिक्षा का अर्थ विद्यालय में

दी जाने वाली शिक्षा से है, जो एक निश्चित समय सीमा में योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण करवाई जाती हैं । शिक्षा का अर्थ सीखना एवं गुरु के पास बैठकर ज्ञान प्राप्ति से है। इस ज्ञान द्वारा विद्यार्थी अपनी आंतरिक शक्तियों एवं गुणों की पहचान कर समाज में अपना विशेष स्थान बनाता है। वर्तमान समय में मनुष्य भौतिकता वादी वातावरण में जीवन यापन कर रहा है। इस समय वह अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु दूसरों का अहित करने में जरा भी संकोच नहीं करता है, अतः हमें बालक को विद्यालय में भी ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे उसमें देश प्रेम की भावना, दया, भाईचारे की भावना आदि अनेक गुणो का विकास हो सके इन जीवन मूल्यों को हम भूलते जा रहे हैं। इसलिए इन्हें बालक के जन्म लेते ही परिवार द्वारा और विद्यालय में प्रवेश के बाद शिक्षक एवं समाज द्वारा विकसित करने का प्रयास निरंतर करना चाहिए। मूल्य एक व्यापक संकल्पना है जिसे विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा जा सकता है, यह इस प्रकार है-

1) व्यक्तिक एवं सामाजिक जीवन मूल्य -व्यक्ति एवं समाज दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं ,क्योंकि व्यक्ति के बिना समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता और समाज के अभाव में व्यक्ति का विकास संभव नहीं है मनुष्य के वह गुण या व्यवहार जो समाज कल्याण हेतु प्रोत्साहित किए जाते हैं सामाजिक मूल्य कहलाते हैं।

2) आर्थिक जीवन मूल्य -अर्थ के बिना मनुष्य अपना जीवन यापन नहीं कर सकता उसे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को प्राप्त करने हेतु अर्थ की जरूरत होती है। रोटी कपड़ा मकान आदि मानव के लिए अति आवश्यक है। इनको प्राप्त करने हेतु वह सही मार्ग को अपनाता है तो वह आर्थिक जीवन मूल्यों के अंतर्गत आता है और इनकी प्राप्ति हेतु वह दूसरों का अहित कर लेता है, तो वह जीवन मूल्यों के अंतर्गत नहीं आती ,व्यक्ति सुखवादी एवं भौतिकवादी जीवन चाहता है इसलिए वह गलत मार्ग अपनाकर आर्थिक रूप से संपन्न होना चाहता है ,जो आर्थिक मूल्य के विरुद्ध है।

3) राजनीतिक जीवन मूल्य- व्यक्ति का विकास समाज में रहकर हो सकता है। समाज के बिना बालक का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है राजनीतिक पक्ष व्यक्ति के विकास मैं एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, जिसके द्वारा किसी समाज या देश को विकसित किया जा सकता है।

4) सांस्कृतिक मूल्य- मानव का विकास एक दिन का परिणाम नहीं है,हम हमारी संस्कृति से प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं, जो हमें अन्य देशों की संस्कृति से पृथक करती है। अतः सांस्कृतिक मूल्यों का भी अपना विशेष स्थान है.

**निष्कर्ष**

कहा जा सकता है कि मूल्य हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं क्योंकि इसके द्वारा हम नवीन पीढ़ी में इन नैतिक मूल्यो को बढ़ा सकते हैं और उन्हें सही मार्ग पर भेज सकते हैं। मनुष्य इन जीवन मूल्यों में वृद्धि कर मानव होने का धर्म निभाने में सफल हो सके एवं मानवता को बचाए रख सके। संपूर्ण पृथ्वी पर कुटुंबकम की भावना विकसित कर सके एवं शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। विश्व युद्ध की भावना को समाप्त कर आपस में प्रेम एवं भाईचारे से निवास कर सके, बालक अपने जीवन में नैतिकता को विकसित कर बुद्धि को विकास एवं सृजनात्मक कार्यों में लगाने का प्रयास कर सके ।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**


- शर्मा ,गणपति राय ; उदयमान भारतीय समाज और शिक्षा ,राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी ,जयपुर ;2013 पृष्ठ संख्या -153 156 –
- सिंह ,एच .पी .शर्मा ,राजकुमारी ;समकालीन भारत और शिक्षा ;राधा प्रकाशन मंदिर आगरा 2015 पृष्ठ संख्या 7 – 1
- सक्सेना ,डॉ निर्मल ;शिक्षा एवं उदीयमान भारतीय समाज ; मालिक एंड क .2006
- पालीवाल ,देवलाल ;घूमरे राजस्थान साहित्य अकादमी ;1972 उदयपुर
- देथा ,विजय दान ;मखण मान्दीयो ,राजस्थान संगीत नाटक अकादमी1985